समर्पणम्

दोषनाश की तडपन वाले **मुमुक्षुओ** को...

गुणप्राप्ति की तडपन वाले **मुमुक्षुओ** को...

संयम की तीव्रतम चाहना वाले **मुमुक्षुओ** को...

परिवार के राग में नहीं फसने वाले **मुमुक्षुओ** को...

संयम का सम्यग्ज्ञान प्राप्त करने वाले **मुमुक्षुओ** को...

संयम की सच्ची-पक्की तालीम लेने वाले **मुमुक्षुओ** को...

संयम स्वीकार में आने वाले हजारो विघ्नो से लडने वाले **मुमुक्षुओ** को...

संयम की सहमति मिलने से हर्षाश्रु से रोनेवाले **मुमुक्षुओ** को...और

मुमुक्षु ऐसा होना चाहिए... ऐसी समझ देने वाले...

युगप्रधानाचार्यसम पूज्यपाद गुरुदेव

श्री चन्द्रशेखर विजयजी म.सा.

श्रुत सौजन्य

मुमुक्षु नीलमकुमारी अशोकजी

एवम्

मुमुक्षु मनीषाकुमारी अशोकजी

की

भागवती दीक्षा

दि. 8 दिसंबर 2019

के निमित्ते

वेष श्रमण नो आप्यो तमने, सफल करो श्री संघ कहे...
गुरु वडला नी शीतल छाये, रहेजो सदा श्री संघ कहे...॥1॥

कालप्रभावे गौतम जेवा, गुरु मले नहीं कोइने कदापि ।
महाव्रतमां जे दृढ़ताधारी, सद्गुरु तें तुज तरवा नावडी ।।
बालकनी जेम वलगीने रहेजो,अलगा कदि गुरुथी न थजो ॥2॥

स्वजनो तमारा संयमीओ हवे, हेतभर्युं हैयुं धरजो,
भूल करे कदि संयमी कोई, माफी मीठी आँखे देजो.....
'संयमीओ भगवान छे' मानी भाव धरी भक्ति करजो ।।3।।

झेरसमुं वांचन सहु त्यागी, शास्त्रामृतना घुंटडा पीजो....
अे अमृतना पाचन माटे, गुरुभक्तिनुं औषध लेजो....
आतमशुद्धि प्रगटी जेटली, अेटली साची कमाणी गणजो ।।4।।

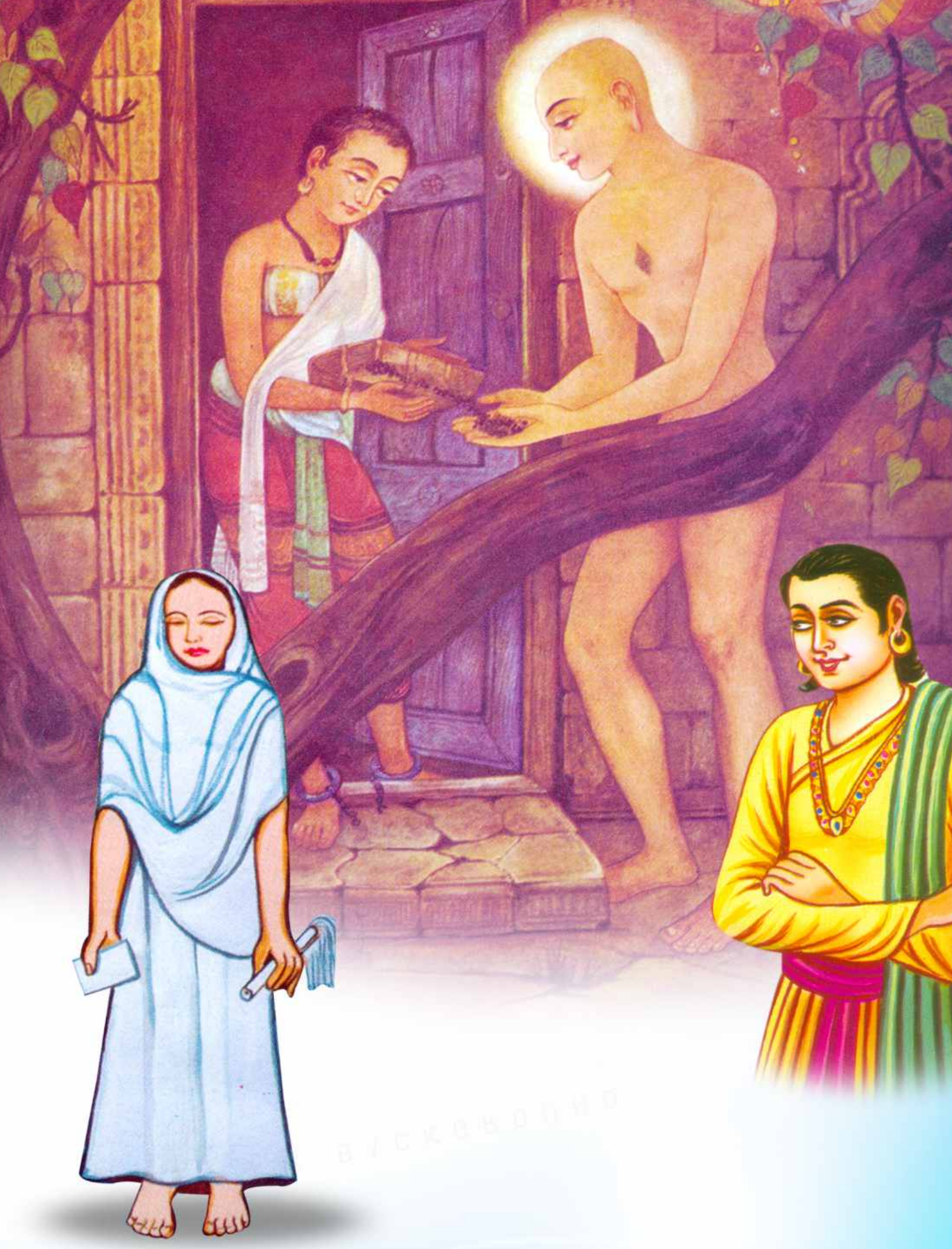

' चंदना ने स्थूलभद्रना वारस, ब्रह्मचारी छो अम उपकारी,
एम श्रद्धानो दीप जलावी, वंदे भावथी सहु नर नारी,
अे विश्वासनी रक्षा करजो, आँखों ने अविकारी धरजो।। 5 ।।

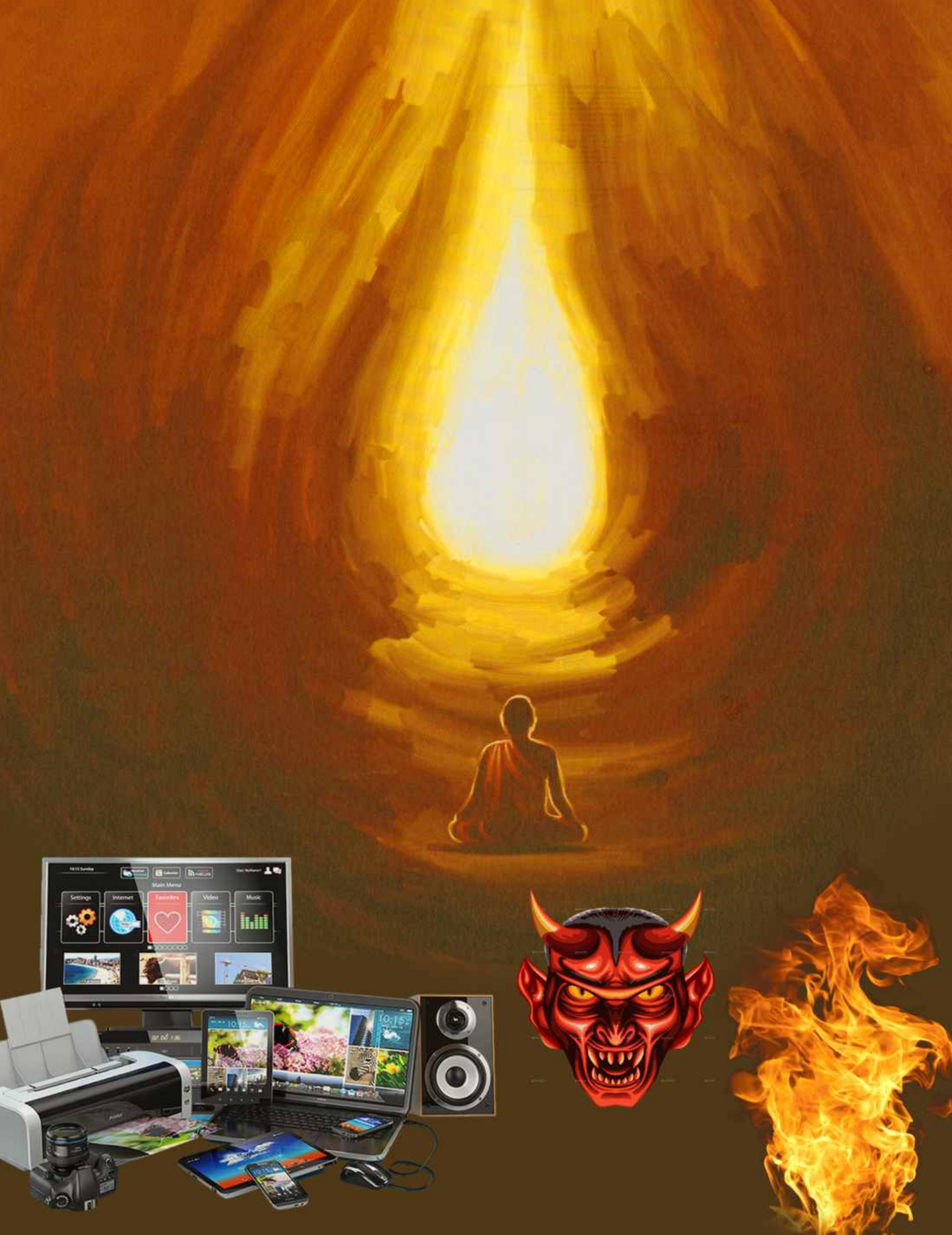

आगथी चाले ने आग समा, जे शोध्या साधन विज्ञाने,
शुभ भावो ने राख करी ने, साधुने शेतान बनावे...
बहाना भले ने, आवे कोई पण, छेटा अे राक्षस थी रहेजो।। 6 ।।

राग शरीरनो संसारीओ ने , संयममां नहीं तेनी शोभा
गोचरी विहार ने ठंडी गरमी, माखी मच्छर तारी विभूषा - - -
हसता सहेजो सहु दुःखो ने, कोमल देह पत्थर सम गणजो ।। 7 ।।

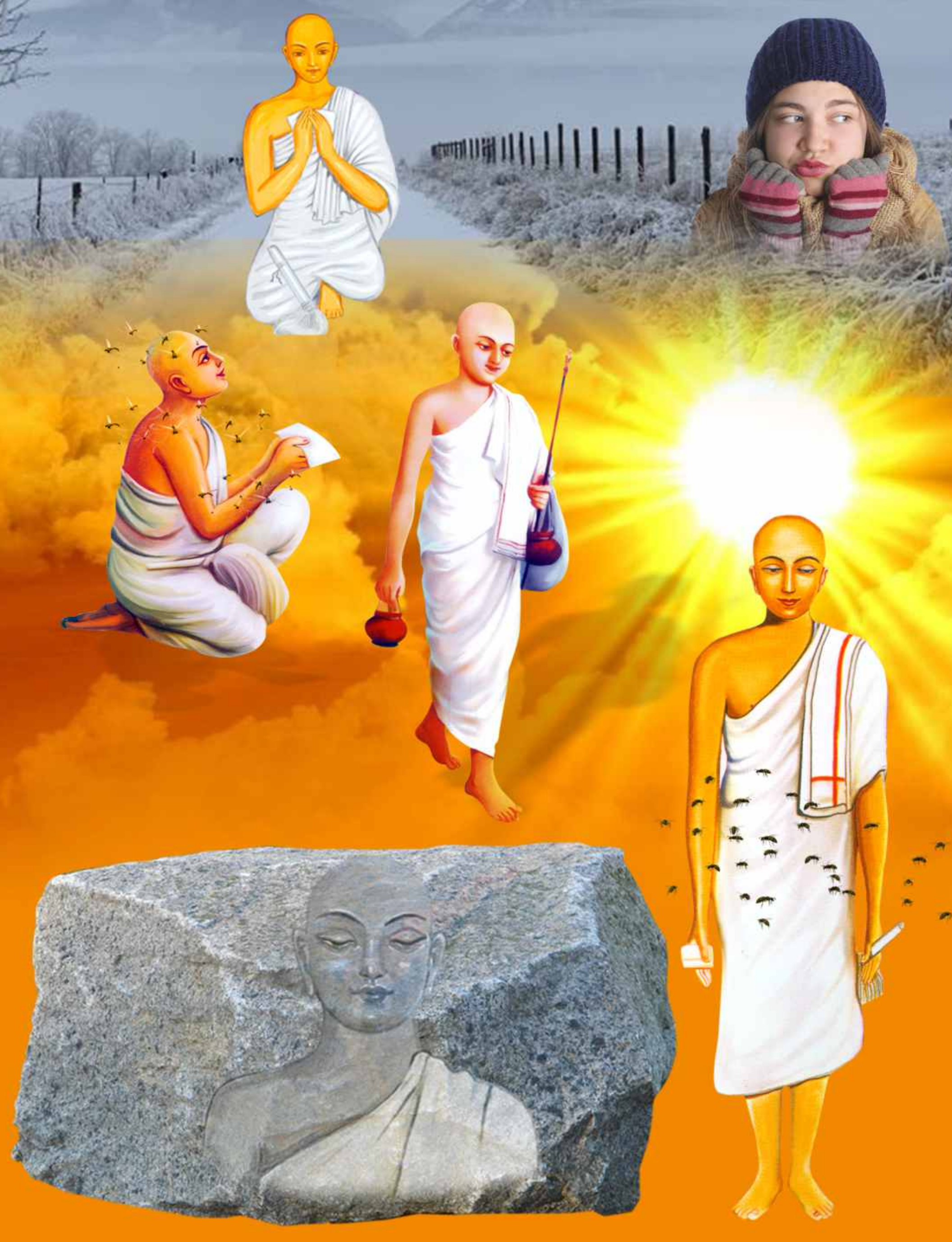

माता-पिता ने भाई-बेनडी, स्वजनो सघला होंशे त्यागी,
एकले हाथे मांडी लडाइ, ओघाने तलवार बनावी...
शहीद नहीं पण विजयी बनजो, मुक्तिनी वरमाला वरजो ...॥४॥

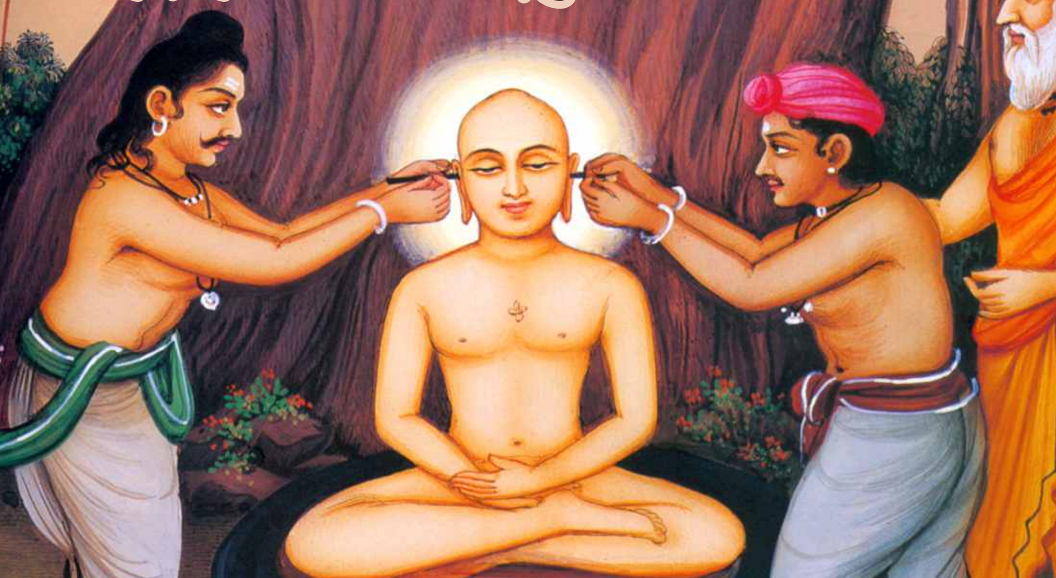

वेष श्रमणनो आप्यो तमने
सफल करो

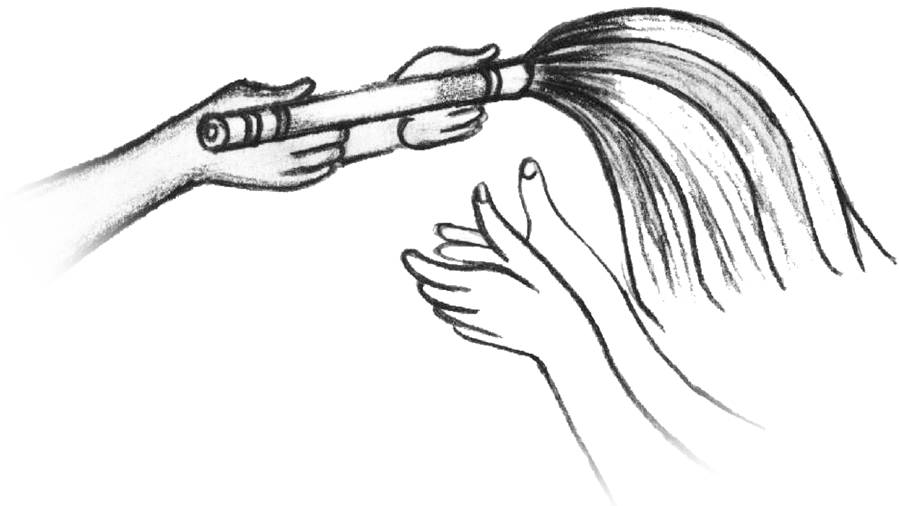

श्री संघ कहे

❊:: दिव्याशिष ::❊

सिद्धान्तमहोदधि, सच्चारित्रचूड़ामणि,

स्व. पूज्यापद आ. भगवंत **श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी महाराज** के

विनेय स्व. पूज्यपाद पं.प्रवर **श्री चन्द्रशेखरविजयजी म.सा.**

❊:: निश्रा प्रदाता ::❊

सुविशाल गच्छाधिपति सिद्धांत दिवाकर श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.

सरल स्वभावी आ. श्री हंसकीर्तिसूरीश्वरजी म.सा.

❊:: लेखक ::❊

मु. गुणहंस वि.

स्वर: जयदीपभाई स्वादिआ....

स्पीच: सोनलबहन राजुभाई, चेन्नई-बिन्नी ❊ **स्पीच संगीत:** कुमारपालभाई, चेन्नई-वेपेरी

प्रथम संस्करण : 1000 प्रति - हिन्दी ❊ वीर निर्वाण कल्याणक, वीर संवत **२५४६**

❊ :: प्राप्ति स्थान :: ❊

नरेशभाई

373 मिंट स्ट्रीट, दूसरा माला, श्री जिनेन्द्र श्रीपाल भवन

के सामने, महाशक्ति होटल के पास, साहुकारपेट,

चेन्नई - 600 001. मो. **98410 67888**

मनोज जैन

श्री आदिनाथ इन्टरप्राईजेस,

7, पेरूमाल मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट,

चेन्नई - 600 001. मो. **98403 98344**

❊ प्रकाशक ❊

कमल प्रकाशन ट्रस्ट

102-अे, चंदनबाला कोम्पलेक्स, आनंदनगर पोस्ट ऑफिस के सामने, भठ्ठा, पालडी,

अहमदाबाद - 380 007. फोन : 2660 5355

:: Printed By ::

जगावत प्रिन्टर्स

39, नाट्टुपिल्लैयार कोईल स्ट्रीट, चेन्नई-1. फोन : 98848 14905 / 98848 14901

प्रस्तावना

संसार में जीना आज ज्यादा से ज्यादा कठीन होता जा रहा है।
पैसा कमाना आसान नही, और मंहगाई का पार नहीं,
मौज-शौक के साधनो का ढेर चाहिए, लेकिन पैसे कहां?
शादी जितनी जल्दी हो रही है, तलाक भी उतनी ही जल्दी हो रही है।

हर एक लडके या लडकी की लाइफ में शादी से पहले कोई एक - दो तो है ही, लगभग सब लफडेबाज बनकर बाद में शादी का जीवन जी रहे है।

स्वभाव की कमजोरी हर एक हृदय को परेशान कर रही है।

न तो कुछ भी सहन करने की तैयारी, न तो सामने वाले की परिस्थिति समझने की तैयारी।

न तो दूसरों की गलती की माफी देने की तैयारी, न तो भविष्य का सोच कर शांति से कुछ भी निर्णय लेने जैसा धीरज।

सास-बहु के झगडे, एकदम कॉमन....

पति-पत्नी के झगडे, एकदम कॉमन

एक दुसरे के सामने जोर - जोर से चिल्लाना,

बेहद खराब शब्द बोलना,

एक दुसरे के ऊपर आरोप लगाना,

एक दुसरे के ऊपर हाथ उठाना.... (पत्नी भी पति को मारेगी, आखिर स्त्री-पुरुष समान हैं न....)

इन सब कारणों से आज का, भोग-साधनों से भरा हुआ संसार भी भयानक हो चुका है।

भोग सुखों के बाद की परलोक की भयानकता तो थी ही, उस चीज को समझाकर वैराग्य उत्पन्न करने का काम तो अब तक महापुरुष करते ही थे, लेकिन परलोक के दुःख साक्षात् दिखते नहीं थे, इसलिए जो परलोक पर अंतर से श्रद्धा करते थे, ऐसे ही जीवों को वैराग्य होता था और वो दीक्षा लेते थे।

अब ऐसी उत्तम आत्माएं तो कम ही होती हैं, इसलिए दीक्षा भी कम!

आज का माहौल अलग है।

यह लोक भी भयानक बन चुका है।

संसार असार है, ऐसे उपदेश के बिना भी युवान-युवतीयों को भी आसपास का माहौल देखकर ऐसा स्पष्ट लगता है कि **संसार असार है ।** बहुत युवतीओं के मन में यह विचार चलते है कि **शादी नहीं करनी** ।

उनको दीक्षा की भावना या धर्म की समझ नहीं है, लेकिन Life की भयानकता उन्होंने देख ली है।

उनको मौज शौक अच्छे नहीं लगते, ऐसी बात नहीं है। उनको होटल **+** बाहर घुमना **+** सेक्स **+** सजना - धजना **+** मूवी - मोबाइल, सब कुछ पसंद है, लेकिन उसके साथ मिलने वाली भयानक दुनिया से वो घबरा चुके हैं। परलोक की नहीं, इस लोक की भयानक दुनिया से !

जब ऐसी आत्माओं को साधु-साध्वी का परिचय होता है, तब दो प्रकार की परिस्थिति खडी हो जाती है।

यदि उत्तमोत्तम कोटी के संयमी के साथ परिचय हुआ, और इन जीवों की खुब पात्रता हो... तो उनको सच्चा वैराग्य प्रगट होता है। मौज शौक का राग भी निकल जाता है, और वो बन जाते हैं संयमी ! नूतन दीक्षित ! मुमुक्षु सब से पहले!

यह तो अच्छी बात है. No Problem!

अब दुसरी बात....

जो संयमी सामान्य हो, उनके पास मौज - शौक के साधन सीधे या Indirect प्राप्त होते हो, खाने-पीने की भी तमाम प्रकार की अनुकूलता हो, सहन करना कुछ भी नही, संघ भक्ति करता है तो भक्ति का लाभ देना है....

वहां इन जीवों को Set हो जाता है....

संसार की कोई विचित्रता यहा है नहीं... (पैसा कमाना आदि) और मौज-शौक की अनुकूलता भी है....

वासना का सुख संपूर्ण न मिले, तो भी नये-नये बहुत लोगों का परिचय, धर्म के बहाने सब का परिचय, बातचीत, हंसना, Letters, मोबाइल पर बातें ... तारणहार बनने का मौका....... इन सब में वासना को संतोष मिल जाता है।

रसगुल्ला ना सही, सीरा तो मिला.... भूखे तो नहीं है।

और अध्यात्म विश्व का एक भयानक संसार लेकर ही यह आत्माएं मुमुक्षु-संयमी बन जाती है।

नुकसान शासन को, इन जीवों को ....दीक्षादाता को तो था ही!

कुछ जीव ऐसे होते है कि

अंदर आज के दु:खमय संसार का भय पडा है....

मौजशौक वाले सुखमय संसार की चाहना भी पडी है...

लेकिन भय ने उस चाहत को दबा दिया है...

इस बीच महात्माओं का संपर्क हुआ....

वह महात्मा मौजशौक में डूबे हुए तो नहीं थे...

लेकिन ऐसे भी नहीं थे कि सामने वाले के अंदर सुखमय संसार की चाहना को मिटा सके, सच्चा वैराग्य जगा सके।

स्वभाव अच्छा, सामान्य जिंदगी जी रहे है।

बस, Set हो जाता है, यहां पर उन जीवों को ....

भोग सुख की भावना खत्म नहीं होती, लेकिन दब जाती है।

वैराग्य सच्चा नहीं, क्योंकि राग दबा हुआ है।

आखिर वह बन जाते हैं संयमी!

समय बीतता जाता है।

यदि सुगुरु का संपर्क, वाचना, श्रवण, पढाई, आदि अच्छे निमित्त मिल जाए तो वैराग्य हो जाएगा सच्चा !

यदि गलत निमित्त मिले, तो दबी हुई सुखमय संसार की **चाहना उभर आती है बाहर !**

* उपधान में, छरि पालित संघ में, सामुहिक चातुर्मास में, तपस्वीयों के पारणे में, विहार धामों के चोके में, भक्तो के घरों में, अंजनशलाका-प्रतिष्ठा आदि महोत्सवों में, श्रावकों की आराधना होती होगी, लेकिन यह जीव तो बिचारा रोज अच्छी-अच्छी आइटम खा-खा कर अपनी आत्मा के वैराग्यगुण का खून करता ही रहेगा। धन्ना-अणगार आदि महात्माओं की बातें इनके लिए फीकी हो जाएगी।

इन सब अनुष्ठानों में, प्रवचनकार बनने के बाद प्रवचनशक्ति के प्रभाव से विजातीय परिचय में डूब जाना.......

बहुत सारी चीजें ऐसी हैं, जिनका वर्णन प्रस्तावना को ही पुस्तक बना देगा।

अंतिम बात.......

* अज्ञान-प्रमाद आदि के कारण से जिन वचनों का पालन छोड चूके सुपात्र संयमीओ के लिए...

* दु:ख से घबराकर, दबी हुई वासना के साथ दीक्षा लेने जा रहे मुमुक्षुओं के लिए....
* **कोरी स्लेट** जैसे सुपात्र मुमुक्षुओं के लिए....
* सच्चे वैराग्य वाले, लेकिन थोडी सी कम समझ वाले मुमुक्षुओं के लिए

यह पुस्तक है।

सद्गुरु के हृदय की भावना है यह,
शास्त्रों का ही गहन तत्व है यह,
गीत-संगीत विवेचन के माध्यम से भावों की वृद्धि का साधन है यह,
जितना लिखा है...

वह सब पालने जैसा ही है, ऐसा अंतर से माना है मैंने,

लेकिन बहुत चीजों का पालन मैं खुद नहीं करता हूं। वो भी प्रमाद से... नहीं के अपवाद या अज्ञान से!

* न तो मेरे में गुरु वडीलों के प्रति बालक जैसा समर्पण हैं..
* न तो मैंने मेरे गुरु भाईओं को सच्चे मन से इतना चाहा है...
* न तो मैंने राजकारण-क्रिकेट-निंदा आदि विकथाओं का त्याग किया है...
* न तो मैं वैयावच्च की रूचि रखता हूं, उल्लास रखता हूं....
* न तो मैं निर्विकारी हूँ, मेरे गुरु की तरह!
* स्वजनों का राग मुझे परेशान नहीं करता, ऐसा मुझे लगता है।
* शरीर का राग है, लेकिन आज के काल की दृष्टि से कंट्रोल में है ऐसा मुझे लगता है।

यह हुं मैं, लेकिन मेरी भावना स्पष्ट है, मेरे होने वाले भाई-बहन (मुमुक्षु), मेरे हो चुके भाई-बहन ऐसे न बने....

जिनाज्ञा विपरीत कुछ भी लिखा हो तो

मिच्छा मि दुक्कडं!

अष्ट मंगल बंगला,
चेन्नई - 600 007.
तिथि मारवाडी आसो वद 10

युगप्रधानाचार्य सम पूज्यपाद गुरुदेव
श्री चन्द्रशेखर विजयजी का शिष्य
मुनि गुणहंस विजय

वेष श्रमणनो आप्यो तमने

(राग : कसमे वादे प्यार वफा)

हे मुमुक्षु !

आपके गुरुदेव आपको श्रमणवेष प्रदान करेंगे।
हम आपसे विनति करते हैं,
साधु जीवन के आचारो का पालन करके,
साधु जीवन के विचारों को आत्मसात करके,
साधुजीवन की भाषा को बराबर संभाल के,
इस वेष को सफल बनाना।

* * * * *

वेष श्रमण नो आप्यो तमने, सफल करो श्री संघ कहे...
गुरु वडला नी शीतल छाये, रहेजो सदा श्री संघ कहे...।।1।।

* * * * *

गाथा - 1 विवेचन

हम चतुर्विधसंघ हैं,तो हम आपको कुछ हित - शिक्षा देना चाहते हैं। साधु जीवन में जिन गुणों की सबसे ज्यादा जरूरत हैं,वो ही हम आपको बता रहे हैं।

(1) गुरुकुलवास:

गुरु एक बहुत बड़ा बड़ का पेड़ है।
शीतल छांव देने वाला पेड़ है।
विषयों की, कषायो की धूप वहाँ परेशान नहीं करती ।
बस, हमेशा उनके पास ही रहना ।
मन में भी उनसे अलग होने के विचार मत करना ।
चाहे, उनकी कडकाइ सहन करनी पड़े,
उनके कटु वचन सुनने पड़े,
उनकी थप्पड़ भी खानी पड़े...

तो भी 'नहीं अच्छा लगता गुरु के पास... छोड़ दु उनको। दूसरे के पास चली जाउं। वो प्रेम से रखते है...' ऐसा भूल से भी मत सोचना ।

* * * * *

कालप्रभावे गौतम जेवा, गुरु मले नहीं कोइने कदापि ।
महाव्रतमां जे दृढ़ताधारी, सद्गुरु तें तुज तरवा नावडी ।।
बालकनी जेम वलगीने रहेजो,अलगा कदि गुरुथी न थजो ॥2॥

गाथा - 2 विवेचन

मुमुक्षु! तेरी ही नहीं, सब मुमुक्षु की ऐसी ही भावना रहती हैं कि 'मुझे तो गौतमस्वामी जैसे, चंदनबाला जैसे गुरु मिले...'

लेकिन यह तो भयानक पंचम काल है- - -

ऐसी बड़ी अपेक्षा मत रखना- - -

कभी नहीं पूरी होगी तेरे मन की यह आशा- - -

गुरु क्रोधी भी होंगे, आलसी भी होंगे, कम ज्ञान वाले भी होंगे, - - -

गुरु भी आखिर छद्मस्थ हैं,वो भगवान नहीं बने।

लेकिन गुरु में यदि एक गुण आपको दिखे कि 'वो महाव्रतों के पालन में दृढ़ हैं, और जो आचारो का पालन वो नहीं कर पा रहे हैं, उसके लिए उनको पश्चात्ताप हैं, वो अपनी गलतियों का इकरार करते हैं, सच्चा मार्ग ही बताते हैं। अपनी शिथिलता का कोई भी तरीके से बचाव नहीं करते हैं।'

तो समझ लेना कि तुम्हारे लिए वो सद्गुरु ही है।

संसार सागर तैरने के लिए एक महान् जहाज नहीं, तो अच्छी नौका तो है ही, डूबाने वाली पत्थर की नाव नहीं है वो ।

देखा है कभी छोटे बच्चों को?
हमेशा माता के आस-पास ही रहेगा ।

जब तक उसको मालूम हो कि 'माता मेरे पास है' तब तक वह निर्भय बनकर

खेलता है...' जैसे ही पता चले कि 'मां नहीं है' तो वो रोएगा, उसको भय लगेगा ही, अपने प्रिय खिलौने को भी छोड़ देगा । आखिर तो मां ही उसका सबसे प्यारा खिलौना होती है ।

मुमुक्षु बहन! ऐसे बच्चे ही बने रहना ।

संसार में तो बच्चा बड़ा होता है, मां की जरूरत कम हो जाती है।

लेकिन संयम में तो दीक्षा के प्रथम दिन से लेकर अंतिम दिन तक बच्चे ही बने रहना। वो ही संयम की सुरक्षा है।

गुरुमां की जरूरत संयमी को जिस दिन से कम महसूस होने लगे, उस दिन से संयमी का पतन शुरू हो जाता है।

हम आपको बड़ा हुआ नहीं देखना चाहते ।

गुरु के लिए बच्चे ही हो, बच्चे ही रहना ।

महापुरुषों के वचन भी देखो...

1. **श्री उत्तराध्ययन सूत्र :** हमेशा गुरुकुलवास में रहना- - -

2. **श्री आचारांग सूत्र :** संयमी का प्रथम कर्तव्य है 'गुरुकुलवास'

3. **श्री दसवैकालिक सूत्र :** बहुत बड़े ज्ञानी बन जाओ, तो भी गुरु को मत छोड़ना।

4. **आवंती अध्ययन :** मछलियां पानी के बिना मर जाती है। संयमी का संयम, गुरु के बिना खत्म हो जाता है।

हमारा = श्री संघ का सारभूत उपदेश है आपको...

(अ) गुरु जो भी काम दे, आदेश करें, छोटा या बड़ा... एक सेकंड भी लगाये बिना तुरंत 'हां जी' बोलना। 'ना' नहीं ही, मौन भी नहीं, देरी से 'हां' भी नहीं, 'हां जी' वो ही शब्द! वो भी जल्दी।

(ब) वो काम तुरंत करना, पूरा करना, अच्छा करना, करने के बाद गुरु को बताना ।

(स) गुरु छोटा या बड़ा कोई भी काम दे, तो खुशी का कोई पार नहीं, अति बहुमान से, उल्लास से, उत्साह से, वह काम करना। हमेशा गुरु के प्रति अतिश्रेष्ठ बहुमान भाव रखना। उनको गुरु नहीं, भगवान ही

मानना। 'इतने सारे संयमी हैं, मुझे ही क्यों इतना काम? मेरी पढ़ाई कब होगी? मुझे ही क्यों सुनाते हैं? दूसरों को तो कुछ भी नहीं कहते?' ऐसा कभी मत सोचना।

यह है तुम्हारे लिए **गुरुकुल वास!**

स्वजनो तमारा संयमीओ हवे, हेतभर्युं हैयुं धरजो,
भूल करे कदि संयमी कोई, माफी मीठी आँखे देजो.....
'संयमीओ भगवान छे' मानी भाव धरी भक्ति करजो ।।3 ।।

गाथा - 3 विवेचन

(2) साधर्मिक वात्सल्य : कितना चाहते हो तुम अपने भाई-बहनों को! अंकल-आन्टी को! मामा-मामी को! मासा-मासी को!

उनके दुःख में दुःखी बन जाते थे तुम....
उनके सुख में प्रसन्न बन जाते थे तुम....
मीठा मीठा प्यार महसूस करते थे उनके लिए तुम....
लेकिन अब?
अब आपका परिवार बदल रहा है।
आपकी गुरु बहना ही आपका परिवार हैं।
भूल जाना अपने संसारी भाई बहनों को,
छोड़ देना उनके प्रति के स्नेह राग को,
वो ही चाहना खड़ी कर देना अपने गुरु बहनों के लिए।
उनको दुःखी देखते ही आँसू बहने चाहिए तेरी आँखों से।
उनकी खुशी देखकर ही तेरा मन-चेहरा हर्ष भरा होना चाहिए।
कभी भी ईर्ष्या की आग में जलना मत....
उनकी पढ़ाई, पुण्य, परिवार आदि की बढोतरी देखकर तडपना मत....
प्रेम.... प्रेम.... प्रेम.... वात्सल्य, वात्सल्य, वात्सल्य....
छोटे संयमी, कमजोर संयमी, प्रमादी संयमी कभी भूल भी कर दे,

वह गलती ऐसी भी हो,जो तुम को ही नुकसान करें,
तुम्हारी निंदा भी की हो उन्होंने,
तुम्हारा काम भी बिगाड़ा हो उन्होंने,

लेकिन मुमुक्षु! तुम तुम्हारे मन को मत बिगाड़ना...
उनकी कोई भी गलती हो, छोटी या बड़ी... क्षमा देना उनको...
वो भी कड़वाहट भरी, क्रोध भरी क्षमा नहीं। आंखों के अमी बरसाती हुई क्षमा।
बस, इतना समझना कि
तेरे आस-पास जो भी संयमी है,वो हर एक भगवान है।
चले गए 24 तीर्थंकर, लेकिन अपनी जगह पर गुरु बहनों को बिठाकर...
ध्यान रखना...

* गोचरी-पानी-स्थंडिल-मात्रु, पैर दबाना, संथारा करना, विहार... आदि तमाम बातों में तुम्हारे भगवान की, गुरु बहनों की भक्ति करना....
* मन में दुर्भाव नहीं आना चाहिए, उनके अवगुण देखकर भक्ति भाव टूटना नहीं चाहिए। 'जीवंत भगवंत की भक्ति करने का मौका कब मिलता है?' यही सोचना चाहिए ।
* भक्ति करते वक्त उत्तम शब्दों का प्रयोग करना। मीठे शब्द शक्कर का काम करते हैं।

वो शब्द भी सहज होने चाहिए ।
जब लड़की शादी करके ससुराल जाती है, तब वो बन जाती है बहू।
अब उसका परिवार हैं ससुराल के लोग! पीहर के लोग नहीं....
उसकी तमाम जिम्मेदारी ससुराल के लिए है, पीहर के लिए नहीं....
मुमुक्षु बहना! यही तो करना है तुझे भी....
पीहर की पालकी से ससुराल की सूली अच्छी....
संसार के स्वजनों से संयमीओका परिवार अच्छा, बहुत अच्छा, बहुत बहुत....!

* * * * *

झेरसमुं वांचन सहु त्यागी, शास्त्रामृतना घुंटडा पीजो....
अे अमृतना पाचन माटे, गुरुभक्तिनुं औषध लेजो....
आतमशुद्धि प्रगटी जेटली, अेटली साची कमाणी गणजो ।।4।।

गाथा - 4 विवेचन

(3) **स्वाध्याय:** बहु को ससुराल में क्या करना? ससुराल के काम!

मुमुक्षु! तुझे संयम लेने के बाद क्या करना? मुख्य रूप से स्वाध्याय!
24 घंटे का दिन!
लगभग 12 घंटे करना है स्वाध्याय!

6 घंटे आवश्यक है नींद!

बाकी 6 घंटे में दो प्रतिक्रमण + दो प्रतिलेखन + दो पात्रा प्रतिलेखन + गोचरी-पानी + स्थंडिल-मात्रु + मंदिर... आदि।

प्रभु के वचनों को कंठस्थ करना, सूत्र स्वाध्याय!

प्रभु के वचनों को समझना, अर्थ स्वाध्याय!

Newspapers...
Novels...
धार्मिक पत्रिका, पोस्टर्स, बेनर्स...

गृहस्थों के साथ फिझुल की बातें...

संयमीओ के साथ फिझुल की बातें...

खाने-पीने की बातें, हंसी-मजाक की बातें, निंदा की बातें...

These all things are Poison, for your संयम, संयमपरिणाम! **मत पीना इस Poison** को....

नहीं करनी है स्वजनों से, मित्रों से बातें...

नहीं लिखनी है किसी को हितशिक्षा भी...

नहीं करना है तुझे परोपकार...

कम से कम 10 साल तो यह परोपकार से भी दूर ही रहना।

अमर बनने निकली है तू,

तो पी लेना अमृत हमारा!

प्रभु के वचन ही तो हैं वह अमृत!

ध्यान से सुन हमारी बात....

* सुबह एक घंटा भी तू गाथा कंठस्थ करती हैं, तो रोज की 3 गाथा होगी।

साल की होगी 360 × 3 = 1080

10 साल की होगी 10800 गाथा....

वैसे आपकी शक्ति तो घंटे की 10 गाथा करने की है। आप चाहो तो साल की 3600 गाथा कर सकते हो। 10 साल की 36000 गाथा!

फिर भी हम अपेक्षा तो सिर्फ 10,000 की ही रखते हैं।
पूरी जिंदगी पक्का रखना इन श्लोकों को!
अर्थचिंतन के साथ पाठ करना इन श्लोकों का।

* सैकड़ों ग्रंथ हैं हमारे धर्म के! गुरु के मार्गदर्शन के अनुसार कर लेना पढ़ाई। सावधान!

यह है भारी भोजन!

पाचन नहीं होगा, तो अजीर्ण होगा, अहंकार होगा। 'मैं ज्ञानी, मैं होशियार...'

पाचन करवाने वाला औषध है '**गुरुभक्ति!**'

कमी मत रखना उसमें, प्रमाद मत करना उसमें!

गुरुभक्ति में कितना भी समय लगे, उसे स्वाध्याय का विघ्न मत मानना!

अंतिम बात....

व्यापार में Turnover कितना हुआ, वो इतना महत्व नहीं रखता....

Profit कितना हुआ, वो ज्यादा महत्व रखता है।

हजारों श्लोक + सैकड़ों ग्रंथ.... Turnover है।

आत्मा के गुणों की वृद्धि, दोषों की हानि वह Profit है।

श्लोक + ग्रन्थ से जितनी आत्मशुद्धि हुई, उतनी ही तेरी कमाई।

ईर्ष्या बढी,

अहंकार बढा,

क्रोध बढा,

बहिर्मुखता बढी...

तो यह श्लोक + ग्रंथ ही तेरे दुश्मन बनेंगे, मत भूलना यह बात!

* * * * *

' चंदना ने स्थूलभद्रना वारस, ब्रह्मचारी छो अम उपकारी,
एम श्रद्धानो दीप जलावी, वंदे भावथी सहु नर नारी,
अे विश्वासनी रक्षा करजो, आँखों ने अविकारी धरजो।। 5 ।।

गाथा - 5 विवेचन

(4) **ब्रह्मचर्यः** आपका past जरा देखते जाना मुमुक्षु !

क्या कीमत थी आपकी संसार में?

घरवाले भी रोकटोक करते थे न आपको?

किसी ने हाथ जोड़े थे आपको?

किसने पैर छुए थे आपके?

और जिस दिन आपको रजोहरण मिलेगा....

सिर झुक जाएंगे हजारों लोगों के आपकी ओर....

हाथ जुड़ जाएंगे हजारों लोगों के आपकी ओर....

आंखें नम और नम्र हो जाएगी,हजारों लोगों की आपकी ओर.....

जो मां-बाप को आपने पूरी जिंदगी वंदन किया, वो वंदन करेंगे आपको....

जो भाई-बहन के साथ बहुत झगड़ते थे आप, वो रो पड़ेंगे आज....

कपड़े बदलने के लिए जाते हुए आपके चरणों को....

कपड़े बदलने के बाद वापस आते हुए आपके चरणों को.....

स्पर्श करने के लिए तरसते होंगे वो लोग....

अचानक यह परिवर्तन कैसे आया? मालूम है आपको? नहीं? तो सुनो,

श्रद्धा की ज्योत जली उन सबके हृदय में- - -

वो मानने लगे कि

मुमुक्षु!

विश्व में आज जो सबसे कठिन है,

जो आधी दीक्षा है....

वो ब्रह्मचर्य व्रत के धारक बने हो आप....

चंदनबालाजी का शील मिला है आपको....

स्थूलभद्रजी का आदर्श मिला है आपको....

Impossible को possible बनाया है आपने....

पच्चास-साठ साल की उम्र हो जाने के बाद भी ब्रह्मचर्यव्रत का स्वीकार करने वाले कौन हैं? कितने हैं?

कमाल कर दी आपने तो,

रूप हैं, युवानी है, संपत्ति हैं, मनचाहा पति पा सकते थे...

फिर भी आप कैसे निर्विकारी बन गए? आश्चर्य! अद्भुत!

इसलिए ही आप उपकारी हो हमारे...

आपको देखकर ही हमको भी ब्रह्मचर्य का यथाशक्ति पालन करने का मन होता है। जब विकार सताते हैं, तो धिक्कार होता है हमारी जात पर!

यह सब आपकी बदौलत हैं।

करोड़ों वंदन हो आपको!

भीनी भीनी आंखें

भीना भीना हृदय

भीने भीने भाव

भीनी भीनी श्रद्धा

भीना भीना वंदन!

अब सोचो,

दीक्षा के बाद आपने किसी पुरुष के ऊपर राग किया तो?

किसी को विकार दृष्टि से देखा तो?

खराब पोस्टर्स आदि देखे तो?

खराब नोवेल्स आदि पढें तो?

किसी ना किसी बहाने विजातीय संपर्क से अपनी अतृप्त इच्छा का पोषण किया तो?

तो क्या विश्वासघात नाम का पाप नहीं लगेगा आपको?

क्या माना उन लोगों ने आपको?

क्या निकले आप?

धरती कंप लाने वाले ऐसे पाप कभी मत करना....

रक्षा करना उस विश्वास की!

आंखों को पवित्र ही रखना, हमेशा के लिए.... हमेशा के लिए.... !

ध्यान में लेना हमारी हितशिक्षा- - -

1. वयोवृद्ध पुरुष के सामने भी नजर उठा कर मत देखना।
2. पुरुषों के साथ बात करनी ही पड़े, तो नजर नीची ही रखना। नजरों से नजर मत मिलाना ।
3. गंदे फोटो, गंदे पोस्टर्स, गंदी नोवेल, कुछ भी मत देखना, मत पढ़ना।
4. महापुरुष-महासतीयों की कहानियां बराबर समझना, याद करना, भावित करना।
5. ब्रह्मचर्य की नवगुप्ति है, उनका बराबर पालन करना...

देखो शास्त्र पाठ:

उत्तराध्ययन सूत्र : जो आत्मा दुष्कर ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, उनको

देव,दानव, गंधर्व,यक्ष,राक्षस,किन्नर वंदन करते हैं।

उत्तरा.: महासागर को तैरना और ब्रह्मचर्य का पालन करना समान है।

इन्द्रियपराजयशतक ग्रंथ को रोम रोम में घुंट लेना।

* * * * *

आगथी चाले ने आग समा, जे शोध्या साधन विज्ञाने,
शुभ भावो ने राख करी ने, साधुने शेतान बनावे...
बहाना भले ने, आवे कोई पण, छेटा अे राक्षस थी रहेजो।। 6 ।।

गाथा - 6 विवेचन

(5) कुनिमित्त-त्याग:

आज की तारीख में दुनिया में सबसे ज्यादा अपराध फैलाने वाली आग है इलेक्ट्रिसिटी!

T. V. तो सामान्य हो गया अब...

मोबाइल, इंटरनेट, कंप्यूटर, लैपटॉप, टेब... भयानक आग है।

चले आग से, इलेक्ट्रीसीटी से- - -

खुद भी आग !

विज्ञान की हैरत भरी खोज से दुनिया हैरान है, परेशान है।

शराबी को शराब अच्छी लगने से शराब अच्छी नहीं बन जाती ।

पागल दुनिया इन सब चीजों को बहुत अच्छी माने, तो कभी भी वह अच्छी नहीं बन जाती।

संसारी लोग तो बिचारे कीचड़ में ही पड़े हुए हैं,

वह इस Extra कीचड़ में गिरे, तो क्यां फर्क पड़ता है उनको!

आघात तो हमको इस बात का है कि

सिर्फ अजैन साधु नहीं,

कुछ जैन साधु-साध्वी भी यह दल-दल में फंसे, ऐसे फंसे है कि साधुता मर गई, शैतानियत का जन्म हुआ उनकी आत्मा में।

शर्म आ रही है उस शैतानियत का स्वरूप बतलाने में....

वेदना से तड़प रहे हैं हम....

हताश हो रहे हैं हम....

आखिर, मध्यस्थ बन गए हैं हम...

लेकिन, प्यारी मुमुक्षु बहना!

तू तो अभी खिलता हुआ छोटा सा फूल है।

तुझे तो अभी खिलना है, पूरी जिंदगी खिले हुए ही रहना है।

उत्तम संयम का रूप दिखाना है तुझे दुनिया को....

उत्तम स्वभाव की सुगंध फैलानी है तुझे दुनिया में....

खिलने से पहले या खिलने के बाद, कभी भी तुझे मुरझाना नहीं है....
मानेगी हमारी बात..... ?

तो दृढ़ संकल्प कर.....

कितने भी बहाने आए,

तू इन राक्षसों से दूर ही रहेगी।

तुझे नहीं बनना है भोजन इन राक्षसों का ....

प्रतिज्ञा ले लेना बहन!

* मैं मोबाइल हाथ में लूंगी नहीं,
* मैं स्पीकर पर बोलूंगी नहीं,
* मैं स्पीकर पर सुनूंगी नहीं,
* मैं मोबाइल आदि में कुछ अच्छा भी, प्रभु के फोटो भी, दीक्षा भी देखूंगी नहीं,
* मैं मोबाइल करवाऊंगी नहीं,
* महत्व के कारण से यदि करवाना ही पड़े, तो गुरु/वडील की सहमति लेकर ही करवाऊंगी। बाद में उसका प्रायश्चित्त करूंगी।

* हो सके तब तक उपाश्रय में, मेरे सामने बात नहीं करवाऊंगी, लेकिन गृहस्थ को बात समझा दूंगी। वो उपाश्रय के बाहर जाकर काम निपटा लेंगे।
* मोबाइल आदि के ऊपर भक्ति गीत, स्तवनादि सुनूंगी नहीं।
* Photo - Video ग्राफी से बचकर रहूंगी।

Sloping Stone यह साधनों की दुनिया।

जो नहीं फिसला, वो मोक्षगामी!

जो फिसला, उसके लिए ' **ॐ शांतिः शांतिः शांतिः** '

* * * * *

राग शरीरनो संसारीओ ने , संयममां नहीं तेनी शोभा
गोचरी विहार ने ठंडी गरमी, माखी मच्छर तारी विभूषा- - -
हसता सहेजो सहु दुःखो ने, कोमल देह पत्थर सम गणजो ।। 7 ।।

गाथा - 7 विवेचन

शरीर राग त्यागः हमको तो गरमागरम रोटी-सब्जी चाहिए,ठंडा नहीं चलता....

हमको तो फ्रीज का ठंडा ठंडा पानी चाहिए, मटके का भी नहीं चलता....

हम तो वाहन में ही जाते हैं, चलकर जाना हमको पसंद नहीं....

ठंडी की ऋतु में रजाई-गद्दी चाहिए, हीटर चाहिए....

गरमी की ऋतु में A.C. चाहिए, पंखा भी नहीं चलता....

शरीर का राग संसारीओ के पास यह चिंतन करवाता है और बुलवाता है।

मुमुक्षु!

पक्का समझ कर ही दीक्षा लेना, संयम में यह शरीर राग बिल्कुल अच्छा नहीं।

ऐसा सोचना भी मत कि

मुझे गर्म गोचरी चाहिए, अमुक सब्जी ही, अमुक दाल ही चाहिए, अमुक

समय पर ही चाहिए...

गोचरी गरम मिले या ठंडी, कोई भी सब्जी, कोई भी दाल, कोई भी समय पर मिले.... सब चलाना ही है तुझे। मन में भी संताप, शिकायत नहीं आनी चाहिए।

विहार सुबह हो या शाम को, जल्दी हो या देरी से हो, लंबा हो या छोटा हो, उपधि कम हो या ज्यादा हो... मन से भी फरियाद करने काअधिकार खत्म हो चुका है तेरा।

कितनी भी ठंड क्यों न हो, तुझे एक कंबल, दो कपड़े दिए हैं... उससे तुझे निभाना है। सहन करने के दिन वैसे भी बहुत कम ही होते हैं, उसमें फिर ब्लैंकेट आदि की मन से भी इच्छा मत करना ।

गर्मी कितनी भी हो, तुझे ज्यादा से ज्यादा कुदरती हवा के ऊपर जीना है। पसीने का ढेर हो, तो भी मुंह से बोलना भी नहीं है कि ' आज बहुत गर्मी है 'अरे, मन से सोचना भी नहीं। 'कब हवा आएगी, ऐसा आर्तध्यान भी मत करना। हवा चालु हो तो ' हाश ' ऐसा एहसास भी नहीं होना चाहिए।

दिन के समय में कभी-कभी मक्खियां परेशान करने आएगी। गोचरी में, स्वाध्याय में, दोपहर के थोड़े से आराम में हैरान करेगी... उस वक्त गुस्सा नहीं आना चाहिए तुझे, जोर से नहीं उड़ाना है तुझे, प्रसन्नता कम नहीं होनी चाहिए तेरी....

रात को मच्छर आएंगे, लहू चूसने तेरा! बिना पैसे ब्लड टेस्ट करने वाले वह उपकारिओं पर अरुचि मत लाना। जोर से मत उड़ाना। जरूरत पड़े तो धीरे से उनको दूर करना... नींद आने के बाद मच्छर की सेना का आक्रमण हो, तो जो अरुचि पैदा होती हैं, वो भी शरीर का राग है। मत होने देना यह...

अरे, मुमुक्षु!

हमने जो बाते कही, वह तो बहुत सामान्य बातें हैं।

हम तो चाहते हैं कि

* रात को दो-ढाइ बजे भयानक ठंड में दस-बीस-तीस मिनट कंबल के बिना काउस्सग्ग कर तू! स्वाध्याय कर तू ।
* भयानक गर्मी में टेरेस पर दोपहर दो बजे तपी हुई टाइल्स के ऊपर कम से कम पांचेक मिनिट भी खड़ी रहकर शरीर के राग को तोड़ दे तू!

* मक्खियां शरीर पर बैठती रहे और कम से कम पांच-दस मिनिट बिल्कुल हलन चलन किये बिना खंभे की तरह स्थिर रहे तू!
* मच्छरों की सेना लहू चूसे और तू कम से कम पांच-दस मिनिट स्वामीवात्सल्य का लाभ लेती रहे....

करेगी ऐसी साधना? हो पाएगी ऐसी साधना? प्रयत्न जरूर करना....

नरक के दु:खों को, तिर्यंचके दु:खों को दूर करने वाले यह मानवीय दु:खों को हसते-हसते ही सहन करना!

जानते हैं हम, घर में तू कोमल कमल की तरह पली है, लेकिन भूल जाना उस कोमलता को....

समझ लेना कि वो कमल अब बन गया है पत्थर!

देख शास्त्र वचन

देहदु:खं महाफलं शरीर को सम्यक् प्रकार से दु:ख देने से उत्कृष्ट फल मिलता है।

तू कोमल कमल-कली नहीं,
तू कठोर पत्थर है....।

* * * * *

माता-पिता ने भाई-बेनडी, स्वजनो सघला होंशे त्यागी,
एकले हाथे मांडी लडाइ, ओघाने तलवार बनावी...
शहीद नहीं पण विजयी बनजो, मुक्तिनी वरमाला वरजो...॥8॥

गाथा - 8 विवेचन

(6) **सर्वसंगत्याग :** रोते हुए माता-पिता-भाई-बहन को हंसते-हंसते छोड़ा है तूने!

राष्ट्र के लिए लड़ने जाने वाले सैनिक की तरह तेरा तेज चमकता है।

किसी की सहायता लेना सोचा भी नहीं तुने!

सारथी बनके तेरा संयम रथ चलाएंगे देव-गुरु!

लेकिन दुश्मनों के साथ लड़ाई तो तू अकेली ही करेगी।

देव-गुरु मार्गदर्शक है, तू योद्धा है, शूरवीर है।

आज संकल्प कर लिया है तूने,

लड़ना है, अकेले ही लड़ना है।

आत्मा के दुश्मनों को खत्म करना है।

क्रोध-अहंकार-कपट-आसक्ति-ईर्ष्या-निंदा-स्वार्थ-आलस-विकार... ऐसे-ऐसे हजारों दुश्मनों के साथ अकेली लड़ेगी तू!

गुरु तुझे देंगे एक महान शस्त्र!

रजोहरण! एक तलवार!

आशीर्वाद है हमारे सब के.....

युद्ध में तो कोई सैनिक मर जाए, तो 'शहीद' के रूप में उसका सम्मान किया जाता है। लेकिन इस आत्मयुद्ध में तो मौत यानि बड़ा लंबा संसार! इसलिए हम तुझे शहीद देखना ही नहीं चाहते।

शिवास्ते सन्तु पन्थानः

विजयी भव!

राह देखेंगे हम, मुक्ति कन्या तेरे गले में वरमाला की स्थापना करें....उस दिन का।

जा, मुमुक्षु जा!

हमारे आंसुओं को देखना ही मत!

कठोर पत्थर बन जाना! अलविदा.... अलविदा.... अलविदा....

* * * * *

समजु छो, तमे वैरागी छो, मुक्ति मंझिल ना साचा मुसाफिर....
कहेवुं पडे नहिं तमने कांइ, संयम बाबतमां छो माहिर....
अंतिम शीख छे तो पण संघनी, महावीरने कदि ना विसरशो....॥9॥

गाथा - 9 विवेचन

मुमुक्षु बहना!

हम ठहरे संसारी! पापी! अपराधी! अज्ञानी!

क्यां हैसियत है हमारी कि तुझे कुछ भी सलाह दें,हितशिक्षादे- - -

तेरे सद्गुरुने तुझे सब कुछ सिखाया है।

हमारे घर की नटखट, तूफानी, चंचल, बेटी सद्गुरु के संपर्क से आज समझदार बन चुकी है, गंभीर और शांत बन चुकी है।

तुझे देखकर शर्म आती है हमको हमारे ऊपर!

जो तूने छोटी उम्र में पाया, हम वह पूरी जिंदगी में भी नहीं पा सके...

धन्यवाद है तेरे सद्गुरु भगवंत को!

वंदन है तेरे निर्मल वैराग्य को!

ऐसे तो हम भी श्रावक-श्राविका कहे जाते हैं। जैन कहे जाते हैं।

लेकिन.... हमको मालूम है... सिर्फ नाम के जैन बन बैठे हैं हम तो....

तू है सच्ची मुसाफिर मोक्षमार्ग की!

क्योंकि रत्नत्रयी रूप रास्ते पर तू ही तो चल रही है। हम कहाँ?

एक पवित्र परिवार में, सदस्य बनने वाली है तू....

हमको सिर्फ खुशी ही नहीं, गौरव महसूस होता है।

सब गुरुवर्या ने तुझे सब कुछ सिखाया ही है, तू संयम की तमाम बात में माहिर ही हैं। कुछ भी तुझे कहना जरूरी नहीं और उसमें भी हमारे जैसे तो क्यां कहेंगे तुझे?

फिर भी, तेरे प्रति सच्चा प्रेम है,

तेरी चिंता भी है,

इसलिए इतना कह दिया है।

हमारी हितशिक्षा से तुझे दु:ख हुआ हो,

या, हमने कुछ गलत कह दिया हो,

तो क्षमा कर देना मुमुक्षु बहना!

एक **Last** हित शिक्षा!

शासनपति, त्रिलोकगुरु, परमात्मा महावीर देव को, उनकी साधना को कभी भी भूलना मत!

कभी भी तेरे जीवन में आचार, विचार, उच्चार में थोड़ा सा भी बदलाव आए, पतन आए.... तो प्रभु को, उनकी साधना को याद कर लेना। अवश्य तुझे सही रास्ता मिल जाएगा, तू अपने आपको, अपने आप ही बचा पाएगी।

तेरी आत्मा ही तेरी आत्मा की रक्षा करेगी।

प्रभु की साधना का विस्मरण नहीं होने देना।

* * * * *